You can send your Sipiritual Articles, Poems, Bhakti Geet & Spiritual Thoughts for www.g urdeepsingh.jimdo.com at gs.sehaj@gmail.com

Please Join my Group BLESSINGS 4 ALL at http://groups.google.co.in/group/blessings4all/ for Spiritual Quotations via E-mails.

अध्यात्मिकता

(श्रीमति अनिता वधवा, रोहिणी, दिल्ली)

संसार में अनेक प्रकार के जीव–जन्तु हैं इन सभी में ब्रह्म व्यापत है मगर वह इन आँखों से नहीं देखा जा सकता। कन्दराएँ हों, पहाड़ हों, पेड़ पौधे हैं, बेले हों या घास हो सभी स्थानों पर ब्रह्म व्यापत है लेकिन इसे अपने आप समझ पाना कठिन है। सत्गुरू की कृपा से विवेक जागृत होता है। परमात्मा की जानकरी के बिना हम अध्यात्मिक हो ही नहीं सकते क्योंकि अध्यात्म का मतलब ही आत्मा का अध्यन करना है और ब्रह्म की जानकारी के बिना आत्मा का अध्ययन हो ही नहीं सकता। "अपने को जानना और भयमुक्त रहना ही ज्ञान है। लेकिन जन्मों–जन्मों से मनुष्य के मन में अज्ञानता की गांठ पड़ी हुई है। मनुष्य कर्मकाण्डों से परमात्मा का जानना चाहता है लेकिन यह ऐसे ही असम्भव है जितना की पानी बिलोकर मक्खन निकालना। और सत्गुरू की कृपा से इतना आसान है जितना दिया–सिलाई जलाते ही वर्षो का अंधकार दूर हो जाता है।

महर्षि उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु को चार वेदों और छःशास्त्रों के अध्ययन का बहुत अभिमान हो गया था। एक दिन पिता ने पुत्र को अपने पास बुलाया और कहा कि आपके पास तो बहुत ज्ञान है क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आखिर वह क्या वस्तु है "जिसे पाने से सब कुछ पाया जाता है, जिसे जानने से सब कुछ जाना जाता है। जिसका ज्ञान होने से सभी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है। श्वेतकेतु ने जब यह सुना तो वह हैरान हो गया कि आखिर वह क्या वस्तु हे। उसने फिर पिता से निवेदन किया कि आप ही मुझे बताने की कृपा करें। तब ऋषि उद्दालक ने समझाया कि कारण रूप मिट्टी का ज्ञान हो जाने से कार्य रूपी सुराही, घड़े तथा अन्य खिलौनों का ज्ञान स्वयमं हो जाता है। सत्य वस्तु तो मिट्टी है। घड़ा, सुराही तो केवल रूप विकार है। सोने का ज्ञान होने से कड़े, कुण्डल गहनों का ज्ञान स्वयमं हो जाता है। इसी प्रकार जब सत्य की अर्थात परमात्मा की जानकारी हो जाती है तो कार्य रूप प्रकृति की भी समझ आ जाती है। सृष्टि की उत्पति से पहले भी परमात्मा था और बाद में भी यही रहेगा। जिस प्रकार विभिन्न बादलों के रूप में जल समुद्र से उठता है बरसता है तो समुद्र का जल ही नदी नालों तालाबों का रूप धारण कर लेता है और विभिन्न नामों से पुकारा जाता है जबकि मूल तो समुद्र ही है। लेकिन अज्ञानतावश नदियां अपने को अलग समझती हैं। यही स्थिति जीव की है यही जीव सत्य स्वरूप ब्रह्म से निकलकर ही नर, पशु आदि अलग–2 रूपों में प्रकट होता है। लेकिन सूक्ष्म आत्मा तो ब्रह्म का ही अंश है जिस प्रकार सूक्ष्म बीज विशाल वट वृक्ष का आधार है इसी प्रकार सत्य अर्थात परमात्मा ही बीज रूप है। सूक्ष्म ब्रह्म को चाहे इन चर्म चक्षुओं से नां देखा जाये किन्तु यह अनुभूति गम्य है। निराकार होते हुये भी परमाम्ता जानने योग्य है। जब मनुष्य के जीवन में परमात्मा का आगमन होता है तभी वह आध्यात्मिक कहलाता है। क्योंकि इससे पहले जो संसार है संसारिक ज्ञान है जो कि केवल यहीं काम आता है आत्मा को जानने के लिए परमात्मा को जानना आवश्यक है। जब मनुष्य आध्यात्मिक हो जाता है तो तभी वह वास्तव में मानवता को अपनाता है, सही अर्थो में मनुष्य बनता है।

****

****